



केशव महाविद्यालय

विकसित भारत
अभियान



KESHAV MAHAVIDYALAYA



NAAC ACCREDITED 'A' GRADE CYCLE 2
UNIVERSITY OF DELHI

D
W
A
R
7
K
A

2023-24



द्वारिका

स्वामित्व के बारे में कथन

एवं अन्य विवरण

द्वारिका २३

प्रकाशन का स्थान
दौरा

दिल्ली
सालाना

मुद्रक का नाम
क) क्या भारत का नागरिक है
बी) पता

प्रोफेसर मधु प्रुथी
हाँ
केशव महाविद्यालय
एच-४ -५ जोन, पीतमपुरा
दिल्ली - ११००३४

प्रकाशक का नाम
क) क्या भारत का नागरिक है
बी) पता

प्रोफेसर कनुप्रिया गोस्वामी
हाँ
केशव महाविद्यालय
एच-४ -५ जोन, पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४

संपादक का नाम
क) क्या भारत का नागरिक है
बी) पता

प्रोफेसर दिव्या हरिदास
हाँ
केशव महाविद्यालय
एच-४ -५ जोन, पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४

मैं, प्रोफेसर मधु प्रुथी, एतद्वारा घोषणा करती हूँ कि दिए गए विवरण मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

अंक : अप्रैल २०२४

प्रोफेसर मधु प्रुथी

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

& Other Particulars

DWARIKA'23

Place of Publication

Delhi

Periodicity

Yearly

Printer's Name

Prof. Madhu Pruthi

a) Whether Citizen of India

Yes

b) Address

**Keshav Mahavidyalaya
H-4-5 Zone, Pitampura
Delhi - 110034**

Publisher's Name

Prof. Kanupriya Goswami

a) Whether Citizen of India

Yes

b) Address

**Keshav Mahavidyalaya
H-4-5 Zone, Pitampura
Delhi - 110034**

Editor's Name

Prof. Divya Haridas

a) Whether Citizen of India

Yes

b) Address

**Keshav Mahavidyalaya
H-4-5 Zone, Pitampura
Delhi - 110034**

I, Prof. Madhu Pruthi, hereby declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief

Issue : April 2024

Prof. Madhu Pruthi

Table of **CONTENTS**

<i>About the College</i>	5
<i>Messages</i>	7
हिंदी लेखन	15
<i>English Expressions</i>	20
<i>College Societies</i>	41
<i>Art Gallery</i>	45

कॉलेज के बारे में

"कॉलेज वह स्थान है जहाँ पत्थरों को चमकाया जाता है और हीरे को धुंधला दिया जाता है।"

-रॉबर्ट इंगर्सोल

केशव महाविद्यालय एक संस्थान है जो छात्रों में रचनात्मकता को बढ़ाता है और शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता को भी अपनाता है ताकि वे वास्तविक जीवन के चुनौतियों के लिए समाधानों के साथ तैयार हो सकें। केशव महाविद्यालय में, हम छात्रों की आत्मा में सकारात्मकता को पोषण देते हैं और उन्हें दृष्टि और साहस देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ताकि वे दुनिया भर में परिवर्तन की शुरुआत और प्रबंधन कर सकें। संस्थान को एक्सीलेंस की खोज में आसमान भी सीमा नहीं है, इस तथ्य का एक टुकड़ा भी है कि एनएएसी प्रमाणन के लिए ग्रेड 'ए' केवल हमारे लिए ही नहीं है।

केशव महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे नवीन संघ कॉलेजों में से एक है, जो १९९४ में एन.सी.टी दिल्ली सरकार द्वारा स्थापित किया गया था। २०२२ में एमएचआरडी के राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) द्वारा केशव महाविद्यालय को ८४ वां स्थान प्राप्त हुआ है। यह एन.सी.टी दिल्ली सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तपोषित है। यूनिवर्सिटी के दिल्ली के सबसे नवीन कॉलेजों में से एक होने के बावजूद, केशव महाविद्यालय को हर साल यूनिवर्सिटी स्थान प्राप्त करने की क्षमता के कारण एक विशेष स्थान मिला है। कॉलेज ने अपने संस्थापक प्रधानाचार्य डॉ. के. पी. चिंटा और वर्तमान प्रधानाचार्य डॉ. मधु प्रुथी के कुशल मार्गदर्शन के तहत बहुत कम समय में चरम पर पहुँचा है। संस्थान ने निरंतर सफलता और योग्यता के आधार पर अपने आप को बनाया है और अपनी उपलब्धियों, शिक्षकों, और बुनियादी संरचना के लिए मान्यता प्राप्त है। कॉलेज वर्तमान में विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन अध्ययन, मनोविज्ञान, और कंप्यूटर विज्ञान के नौ कोर्स प्रदान करता है। कॉलेज फ्रेंच और जर्मन भाषाओं में छोटे समय के कोर्स और डिप्लोमा भी प्रदान करता है। इसमें लगभग १८०० छात्र और १०० शिक्षक सदस्यों और ६० गैर-शिक्षण स्टाफ के पर्यवेक्षण में अध्ययन कर रहे हैं। स्टाफ युवा मस्तिष्कों को अपने ज्ञान, उत्साह, और ऊर्जा के साथ परिचित कराने की जिम्मेदारी को मानता है ताकि वे एक तेजी से बदलते वैश्वीकरण परिवेश के साथ कदम मिला सकें। केशव महाविद्यालय आउटस्टेशन छात्राओं के लिए ७८ छात्राओं के आवासीय सुविधा भी प्रदान करता है, जो एक घर से दूर घर के रूप में है। आवासीय सुविधा सभी छात्रों के लिए एक सुखद, शांतिपूर्ण, और पोषण देने वाला वातावरण प्रदान करता है।



ABOUT THE COLLEGE

"A college is a place where pebbles are polished and diamonds dimmed."

-Robert Ingersoll

Keshav Mahavidyalaya is an institution that brings up creativity amongst students and inculcates ethics along with education to prepare them with resolutions for real-life challenges. At Keshav Mahavidyalaya, we create a leader for tomorrow by nurturing positivity in their attitude and encouraging them to have vision and fortitude to initiate and manage changes across the world. The NAAC accreditation of grade 'A' for the institution is a shred of evidence of the fact that even the sky is not a limit for us in the pursuit of excellence.

Keshav Mahavidyalaya is one of the youngest constituent colleges of the University of Delhi, established in 1994 by the Govt. of NCT of Delhi. The college has been awarded 84th Rank by MHRD's National Institutional Ranking Framework (NIRF) in 2022. It is fully funded by Govt. of NCT of Delhi. Despite being one of the youngest colleges of the University of Delhi, Keshav Mahavidyalaya is considered as one of the best off-campus co-educational colleges having carved a niche for itself by garnering University positions year after year. The college has reached the zenith in a very short span of time, under the able guidance of its founder Principal Dr. K.P. Chinda and present Principal Dr. Madhu Pruthi. The institution has persistently built itself on the cornerstone of success and is acknowledged for its achievements, faculty, and infrastructure. The college at present offers nine courses in the disciplines of Science, Commerce, Management Studies, Psychology, and Computer Science. The college also offers short-term courses and diplomas in French and German languages. It has around 1800 students studying under the supervision of more than 100 faculty members and 60 non-teaching staff. The staff recognizes its responsibility of training young minds integrated with their knowledge, passion, and energy to keep up with the pace of a fast-changing globalized environment. Keshav Mahavidyalaya also provides a hostel facility with an occupancy for 78 outstation girl students providing a place which is a home away from home. The hostel provides a comfortable, peaceful, and nurturing environment for all the students.



प्रधानाचार्य का संदेश



“एक आदमी के मस्तिष्क, नई विचारों द्वारा फैलाया जा सकता है, शायद कभी भी अपने मूल आयामों पर नहीं लौटे।”

-ऑलिवर वेंडेल होम्स जूनियर

"२०२३ का वर्ष समाप्त हो रहा है, जिससे हम एक समय में परिचितता में गिरफ्तार होने की अनुभूति कर रहे हैं जिसे हम कोविड-१९ से पहले भोगा करते थे। निर्विवादित रूप से, हमने खुद को सावधानी और आवश्यक प्रोटोकॉल का पालन करके पोस्ट पैंडेमिक काल में जीने के लिए बनाया है, संस्थान फिर से छात्रों और संकाय के उत्साह से जीवन में आया है। उम्मीद की अमरता, आत्मविश्वास, और असीमित कुरियोसिटी के साथ बुद्धिमान मस्तिष्कों की ऊर्जा को एक रूप में चालीकृत करने के रूप में, द्वारिका के एक और संस्करण को परिरक्षित करना मुझे अत्यधिक खुशी देता है जो ईमानदार अभिव्यक्ति, असंयमित जिज्ञासा, और अविनाशी आशा से भरा है। मैं अपने पाठकों के साथ साझा करने के लिए खुश हूँ कि उत्साह के साथ कई क्रियाओं का आयोजन करने के लिए हमारे संस्थान ने विश्व मानसिक स्वास्थ्य महासंघ और मानसिक स्वास्थ्य के लिए युवा के साथ एक कैंपस में मानसिक स्वास्थ्य अभियान, हिंदी पखवाड़ा, महिला विकास सेल द्वारा आयोजित इंटर-कॉलेज कविता प्रतियोगिता, और बीएमएस विभाग द्वारा आयोजित कॉग्निजेंस'२२ सहित कई गतिविधियों का आयोजन किया। हमने बच्चों का अनुभव करने का अनुभव भी किया जो ऑफलाइन मोड में एक जोशीले अभिवादन सत्र के साथ २०२३-२०२६ के बैच का स्वागत किया।

मैं इस क्षण का लेना चाहूंगा कि संपादकीय टीम को बधाई दें, जो कड़ी मेहनत करके इस प्रतीक्षित संस्करण को लाने के लिए काम किया है।

प्रोफ़ेसर मधु प्रूथी
प्रधानाचार्य
केशव महाविद्यालय

FROM THE PRINCIPAL'S DESK



“A man’s mind, stretched by new ideas, may never return to its original dimensions.”

- Oliver Wendell Holmes Jr.

With the year 2023 coming to an end, it almost feels comforting to fall back on the familiarity we once used to bask in before the COVID-19. Undeniably, while we have tailored ourselves to live in the post pandemic period by exercising precaution and necessary protocols, the institution has come to life with the enthusiasm of the students and the faculty once again. As a form of channelizing the energizing thoughts and opinions of the budding minds, it brings me immense pleasure to flip through yet another edition of Dwarika which is filled with honest expression, uninhibited curiosity, and undying hope. I am delighted to share with our readers that in order to keep up with the fervor, our institution carried out several activities including a Campus Mental Health Drive in collaboration with World Federation of Mental Health and Youth for Mental Health, Hindi Pakhwada, intra-college poetry competition organized by the Women Development Cell, and Cognizance’22 organized by the BMS Department among others. We were also overjoyed with the experience of welcoming batch of 2023-2026 in an offline mode with an invigorating orientation session.

I would like to take this moment to congratulate the editorial team, both faculty and students, who have worked hard to bring out this much-awaited edition.

Happy reading!

Prof. Madhu Pruthi
Principal
Keshav Mahavidyalaya

उप प्राचार्य का संदेश



"मन भरा जाने वाला एक पात्र नहीं है, बल्कि एक आग है जो प्रज्वलित की जानी चाहिए।"

- प्लूटार्क

वर्ष २०२३ ने हमें समायोजित, अनुकूलित, और नए जीने के तरीकों को सीखने की चुनौतियों से भर दिया था, और हमारी सतत प्रयत्नशीलता की सराहना करने योग्य रही। संस्थान के सदस्य के रूप में, कॉलेज कैम्पस को फिर से युवा मनो की कल्पनाओं से गहराया जाना, यह देखकर संतोषमय अनुभव हुआ। हमारे विभाग, क्लब, और सांस्कृतिक समाजों ने अपनी उत्कृष्ट विचारों और परियोजनाओं को वास्तविकता में बदलने की क्षमता प्राप्त की और डी.यू. सर्किट और उससे परे के प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक महोत्सवों की प्रतीक्षित प्रतिस्पर्धा में शामिल होकर संस्थान को गर्व महसूस कराया। हमें आगे बढ़ने वाले २०२४ के बैच के स्वाभाविक स्पर्धात्मक आत्मविश्वास ने और भी प्रेरित किया, जिससे हमारे संस्थान और समाज के उज्ज्वल भविष्य पर हमारा विश्वास मजबूत हुआ।

मुझे यकीन है कि यह द्वारिका'२३ का संस्करण हमारे छात्रों की रचनात्मकता को सफलतापूर्वक आकार देने में सफल रहा है, जो हमें इस अकादमिक सत्र के दौरान कैम्पस में साक्षात्कार करने को मिली है। मैं संपादकीय टीम को इस संस्करण को प्रकाशित करने के लिए हृदय से धन्यवाद और हार्दिक बधाई देती हूं।



प्रोफ़ेसर कनुप्रिया गोस्वामी
उप-प्रधानाचार्या
केशव महाविद्यालय

MESSAGE FROM VICE PRINCIPAL



“The mind is not a vessel to be filled but a fire to be kindled.”

- Plutarch

The year 2023 was filled with the challenges to adjust, adapt, and learn new ways of living and our perseverance has been commendable. As a member of the institution, it was gratifying to see the college campus become lively with the imaginations and pursuits of young minds once again. Our departments, clubs, and cultural societies were able to materialize their passionate ideas and projects and brought pride to the institution by engaging in the much-awaited competitiveness of offline competitions and cultural fests in the DU circuit and beyond. We were further motivated by the unshakeable spirit of the upcoming batch of 2024 which reinforced our belief in the bright future of both our institutions and society at large

I am sure this edition of Dwarika'23 has successfully given shape to the creativity of our students that we have been a witness to in the campus during this academic session. I extend my heartfelt gratitude and heartiest congratulations to the editorial team for bringing out this edition.

Prof. Kanupriya Goswami
Vice Principal
Keshav Mahavidyalaya

संपादकीय टीम की ओर से संदेश



**"हमेशा एक जीवन-कालीन छात्र बनें,
जितना अधिक आप सीखते हैं,
उतना ही अधिक आप कमाते हैं
और आत्म-विश्वास भी प्राप्त करते हैं।"**

-ब्रायन ट्रेसीस

हमें हमारे कॉलेज की वार्षिक पत्रिका, द्वारिका, को लाने और इसका हिस्सा बनने का बहुत आनंद मिलता है, जो सभी कॉलेज के छात्रों और सदस्यों को कहानी-बुनने वालों, सामग्री लेखकों, कवियों, और कलाकारों के रूप में उनकी प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने का मंच प्रदान करता है।

अक्सर रास्ता लक्ष्य से भी रोमांचक होता है; पत्रिका इसमें कोई अपवाद नहीं है। सृजनात्मक प्रक्रिया का हिस्सा होना एक उत्साहजनक अनुभव था क्योंकि प्रत्येक कार्य नई और अनअनुसंधानित विचारों को सामने लाया। यह हमें हमारे छात्रों के मस्तिष्क के एक सवालीन पृष्ठ की एक भव्यता में चलने की अनुमति देता है। इसके अलावा, यह हमें अपने कौशलों को और हमारे दृष्टिकोण और विचारों को प्रस्तुत करने का मौका देता है। हम सभी प्रिय प्रधानाचार्या मैडम को धन्यवाद देना चाहते हैं और सभी छात्र, शिक्षक सदस्य, और संपादन सदस्यों को इस पत्रिका को आकार देने में उनके अत्यधिक समर्थन और कड़ी मेहनत के लिए बधाई देना चाहते हैं। हम सभी आशा करते हैं कि यह पत्रिका पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होगी और वास्तव में उनकी जीवनशक्ति को पोषित करेगी।

संपादकीय टीम
द्वारिका २०२३

MESSAGE FROM EDITORIAL TEAM



*'Be a lifelong student,
The more you learn, the more you earn
And more self-confidence you will have.'*

-Brian Traces

It gives us immense pleasure to bring to you and be a part of our college annual magazine, DWARIKA, which provides a platform to all college students and members to present their talents as story-weavers, content writers, poets, and artists.

Often the path is more thrilling than the destination itself; the magazine is no exception to it. Being a part of the creative process was an exciting experience as each piece of work brought forth new and unexplored ideas. It felt like a walkthrough of the minds of our students which gave us an insight into the backstage of these creative wonders. Moreover, it gave us the opportunity to present our own skills and put forth our perspectives and ideas. We all would like to extend our gratitude to principal ma'am and congratulate all the students, faculty members, and editorial members for their immense support and hard work in shaping this magazine. We all hope this magazine will enlighten the readers and truly be a source of food for their soul.

Editorial Team
DWARIKA '23

छात्र संपादकीय टीम की ओर से संदेश



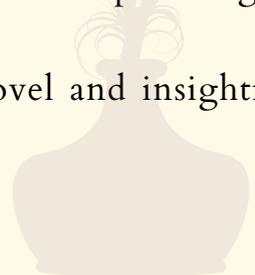
We are all excited to present all the avid readers with the new and vibrant edition of DWARIKA. The time post-pandemic engendered a lot of emotions that would try to escape through different forms of art, viz., drawing, writing, poetry, etc.-a spring of its own kind. The magazine is exhilarated to host these emotions, all of which would not have been possible without the unconditional support, guidance, and blessings of Principal ma'am, Prof. Divya Haridas, and other faculty team members, for which we are very grateful.

It is safe to say that our experience of working on this edition has been nothing short of a learning. It gave us an opportunity to contribute our skills while simultaneously honing them and broadening our horizons. We were able to extend our scope from the verticals we initially set out to take up to exploring uncharted realms of our potentialities.

We would also like to extend our gratitude to all the students who have put their efforts into these creative pieces, making the magazine more captivating.

We hope this edition of Dwarika will present something novel and insightful and help develop a new perspective about the world.

Happy Reading !



MESSAGE FROM STUDENT EDITORIAL TEAM

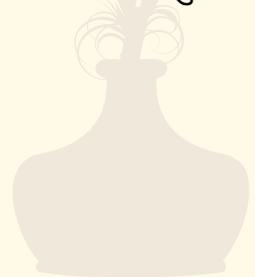


हम सभी शौकीन पाठकों को द्वारिका का नया और जीवंत संस्करण पेश करने के लिए उत्साहित हैं। महामारी के बाद के समय ने बहुत सारी भावनाएँ पैदा कीं, जो कला के विभिन्न रूपों, जैसे ड्राइंग, लेखन, कविता, आदि के माध्यम से भागने की कोशिश करेंगी - अपनी तरह का एक वसंत। पत्रिका इन भावनाओं को प्रस्तुत करने में प्रसन्न है, यह सब प्रिंसिपल महोदया, प्रोफेसर अंजू अरोड़ा और अन्य संकाय टीम के सदस्यों के बिना शर्त समर्थन, मार्गदर्शन और आशीर्वाद के बिना संभव नहीं होता, जिसके लिए हम बहुत आभारी हैं।

यह कहना सुरक्षित है कि इस संस्करण पर काम करने का हमारा अनुभव किसी सीख से कम नहीं है। इसने हमें अपने कौशल को निखारने और अपने क्षितिज को व्यापक बनाने के साथ-साथ योगदान देने का अवसर दिया। हम अपने दायरे को उन कार्यक्षेत्रों से विस्तारित करने में सक्षम थे जिन्हें हमने शुरू में अपनी क्षमताओं के अज्ञात क्षेत्रों की खोज के लिए निर्धारित किया था।

हम उन सभी छात्रों के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करना चाहेंगे जिन्होंने पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए इन रचनात्मक टुकड़ों में अपना प्रयास किया है।

हमें उम्मीद है कि द्वारिका का यह संस्करण कुछ नया और ज्ञानवर्धक प्रस्तुत करेगा और दुनिया के बारे में एक नया दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करेगा।



हिंदी लेखन



अंदरूनी घाव

गोविन्द सिंह राठौर



अंधेरा ?!

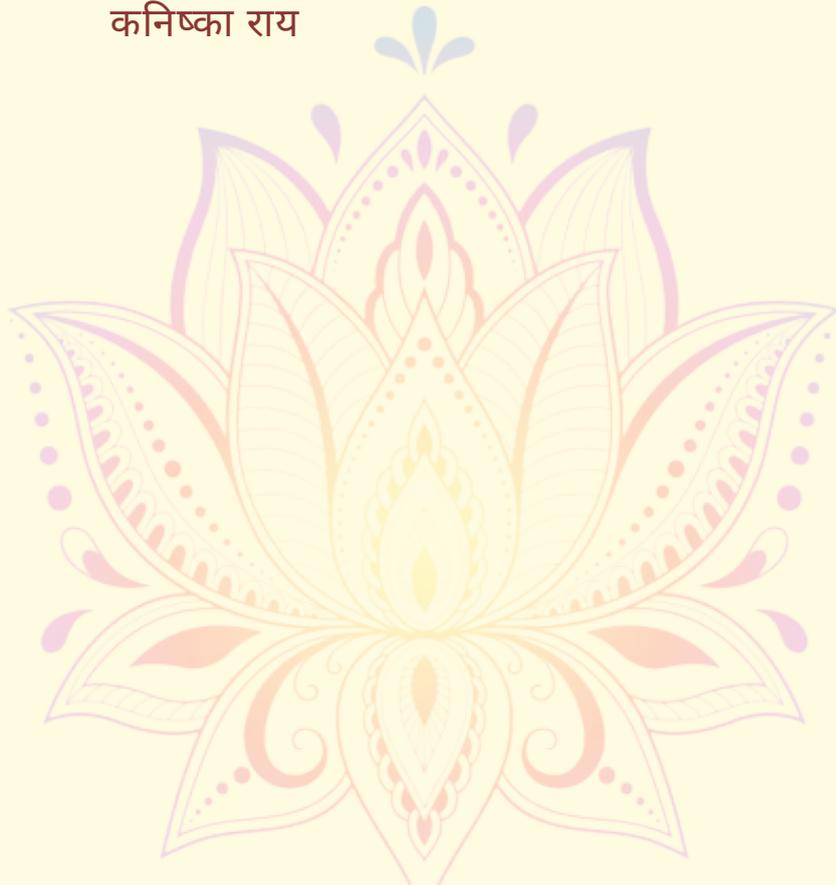
ये मन

दिव्या पालीवाल



क्या द्रौपदी आज भी है?

कनिष्का राय



अंदरूनी घाव

अंतस पर कुछ यूँ पनपी यामिनी
जैसे धरा पर दमकी दामिनी ।
ईश्वर ने की ऐसी भासमान रचना
की लज्जित हुई हीरक, कंचना ।

देख यह स्वर्णिम रूप पावनी
हृदय बना कुबेर की छावनी ।
अलंकारों से अलंकृत विषमय सुधा,
हुई जागृत प्रीतलब्धि की क्षुधा ।

कबीर रंगों से समीर रंगत,
मिला सौम्य स्वप्नों का अधीर संगत ।
नवीन जगत के यह मलिन विचार
करता कृन्दन नटखट मत बारम्बार ।

इस मुखड़े से अब सौंदर्य लांछित,
हुवा व्यंग्य से व्यंगकार वांछित,
कल्पना के रचना में प्रीति भाव बनकर
उतर गया सुने पन्नो में अंदरूनी घाव बनकर ।

गोविन्द सिंह राठौर
बी० एम० एस०
तृतीय वर्ष

अंधेरा ?!

इस शांत को ठगने को आतुर वो तूफान है ...
सागर में उठने वाला एक उफान है ...
आँखे खोल उस क्षितिज के उजाले को देख ...
अब तो हुआ अंधेरा बेईमान है।

ये मन

शब्द अनकहे भी सुन ले कोई ...
आँखों में छुपी बात भी पढ़ ले कोई ...
दिख जाए गर तो धूप में निकाल रखना उसे ...
है वो जैसे पानी में रुई।

दिव्या पालीवाल
बी० एम० एस०
द्वितीय वर्ष

क्या द्रौपदी आज भी है?

क्या द्रौपदी आज भी है?
साम्राज्य के खेल में
फंसी दुःखद कहानी है
निर्भया दिल को छू लेने वाली
बेबस पुकार की बयानी है
तमस अमावस की रात में
एक रावन यूँ जिंदा हुआ
सीता की तलाश में
दर-ब-दर भटकता हुआ
रौशनी की तलाश में
बेहयाई की दहशत से भरी रातों में
चुप्पी नहीं बेबस चीखें गूंजती है
लाल साड़ी गले में लपेटे
जैसे लहराता हुआ झण्डा हो
मेले में देखने क्या रावन जाते हो,
वो तो नकाब पहने सड़को पर है
बुरी नजरो से क्या बचते हो
जब दुशासन की निगाहें ही चीर हरण करती है
बीच सभा मे खड़ी द्रौपदी
मांग रही न्याय की भिक्षा
वो सभा भी यूँ जहाँ मुर्दे है जीते
वो न्याय भी यूँ जो कब्र ही न बना सके
उसके मान का दाँव लगाए बैठा है राज्य

आज लगा, वीर पुरुष से हीन है धरती ये
कच्चा सब् लिए सीना चौड़ा करते हैं
पर दीदा-ए-नम नज़र अंदाज़ करते है
मुख होकर भी कही गयी गूँगी गुड़िया
जब भी जीना चाहा जीवन अपने हिस्से का
हर-बार, बार-बार, खरकी कई आँखों में
भरा पड़ा है इतिहास उसकी पीड़ा से
पर याद रखना वो इतिहास नहीं है
वो जननी है जीवन का हर स्रोतों
जितना छीनोगे धूप उसके हिस्से की
उतना ही लड़ेगी वो अंधेरो से।

शायद द्रौपदी आज भी है!

शायद मैं हूँ द्रौपदी

या मैं हूँ निर्भया

या फिर मैं हूँ अरुना

यूँ तो मेरे नाम बहुत है

आज कुछ तो कल कुछ

आज मे द्रौपदी तो कल कोई

क्या द्रौपदी आज भी है?

हाँ आज भी कई द्रौपदी

यूँ मुर्दा घर में सांस लेती है

और आज भी कई रावण

यूँ किसी लंका पर राज करते है।

कनिष्का राय

बीएससी (ऑनर्स)कंप्यूटर साइंस

प्रथम वर्ष

ENGLISH EXPRESSIONS



Viksit Bharat@2047
Dr. Harpreet Bhatia



My Father's Shirt
Amir Raza



Every corner of this place is cursed
Shambhavi



From boards to bytes
Rahul Arora



Empty Yet Brimmed
Kashish Kaul



Why Sustainable Energy?
Komaldeep



Blue
Kinjal Agarwal



Serendipity
Kashish Kaul



This is where I wanna be
Diksha Pawar



'Everywhere' will be AI
Ayush Kumar Jha



Worlds Apart
Vrinda Sati



Appetency
Kinjal Agarwal



Economic Recession and its Impact on India
Rahul Arora



Different Perspectives of Right and Wrong
Chirag Gupta



My Soul is Made Up of Air Pockets
Kanshika Rai

VIKSHIT BHARAT@2047



Viksit Bharat@2047 is a government initiative that centres on the vision of elevating India to the status of a developed nation by 2047, commemorating the centennial of its independence. At Keshav Mahavidyalaya, the significance of channelizing the creative and innovative potential of our youth to actively contribute to the nation-building process is deeply recognized. The commitment of the college aligns with the overarching goal of Viksit Bharat, and the Viksit Bharat@2047 team plays a pivotal role in realizing this vision under the able patronage of the Principal, Prof Madhu Pruthi. The team consists of representative students from the different courses, NSS and NCWEB representatives, and the President of the Student Union, as well as faculty members. A comprehensive approach has been taken by Keshav Mahavidyalaya, by formulating a team involving students and faculty members in a collaborative effort. The dedicated and enthusiastic team consists of student representatives of different courses, volunteers from NSS, the president of the Student Union, and student representatives of NCWEB. These students are being motivated and channelized by a keen and passionate team of faculty members from different departments of the college, nodal officer of NSS, nodal officer of the social media platforms and teacher representatives of NCWEB.

KESHAV MAHAVIDYALAYA
NAAC ACCREDITED 'A' GRADE CYCLE 2
UNIVERSITY OF DELHI

Know how you can participate in India's transformation!!!
Viksit Bharat @2047

- 14th Feb – Sem II
- 15th Feb – Sem IV
- 16th Feb – Sem VI
- 19th Feb – BA NCWEB
- 20th Feb – BCom NCWEB

Google Meet
4.00 to 5.00 pm
10 Participants from every course & section

A series of webinars was conducted with the purpose of acquainting the regular as well as the NCWEB students with the Viksit Bharat@2047 initiative. The student members of VB, with support of faculty members, conducted the webinars using a well-prepared power-point presentation, which is uploaded on the college website. To augment the initiative's visibility, sunboards and selfie points have been strategically placed on campus to encourage students to share their support on social media. Posters and banners have also been placed at several places in the college to encourage students to register on the portal. So far, around 200 students have registered themselves on the portal. On 7th March, 145 girl students and faculty members attended the Nari Shakti Conclave at the indoor stadium of North Campus, University of Delhi. This event had been organized for celebration of the International Women's Day. The event emphasized upon the power of women and their role in making a change and uplifting the society.

KESHAV MAHAVIDYALAYA
NAAC ACCREDITED 'A' GRADE CYCLE 2
UNIVERSITY OF DELHI

Viksit Bharat Ambassador Club
From a developing to a developed nation

Patron: Prof Madhu Pruthi (Principal)
Nodal Officer: Dr Harpreet Bhatia

Members:

FACULTY	STUDENTS
Dr Richa Sharma	Rajeev Singh
Prof Vinita Jindal	Swati
Dr Daisy Sharma	Komaldeep
Dr Ashutosh Singh	Anoushka Suri
Dr Mohd Azaj Ansari	Harsheen Kaur
Ms Nidhi Khemka	Gurleen Kaur
	Rahul Arora
	Suraiya Tabassum

www.keshav.du.ac.in
viksitbharat@keshav.du.ac.in

KESHAV MAHAVIDYALAYA
NAAC ACCREDITED GRADE 'A' - 2nd CYCLE
(University of Delhi)

VIKSIT BHARAT
AMBASSADOR CLUB

NARI SHAKTI
CONCLAVE

CHIEF GUEST
SMT. SMRITI ZUBIN IRANI
Union Minister for Women,
Child Development and
Minority Affairs
Along with a leading celebrity

Patron: Prof Madhu Pruthi (Principal)

Members: Faculty	Students: Rajeev Singh
Dr Harpreet Bhatia (Nodal Officer)	Swati
Prof Richa Sharma	Komaldeep
Prof Vinita Jindal	Anoushka Suri
Dr Daisy Sharma	Harsheen Kaur
Dr Ashutosh Singh	Gurleen Kaur
Dr Mohd Azaj Ansari	Rahul Arora
Dr Nidhi Khemka	Suraiya Tabassum

PERKS: Participants will be awarded with E-Certificates, T-shirts and wrist bands.

DATE AND DAY: 7th March 2024, Thursday
TIME: 10:00 a.m. onwards
VENUE: DU Indoor Stadium, North Campus

Dr. Harpreet Bhatia

MY FATHER'S SHIRT

I wear my father's shirt
and the dignity,
When dusk appears, the dark
reflection over the mirror forms portrayal
in the boxes of parallel illusions.

I step out a little from the oblivion
followed by the shadow of warmth,
myriad springs pitched by the essence of vitality
in palpable battles of bliss and prosperity,

I wear pride over my membrane
with little patting and hands over shoulders,
accompanied by the faith;
praises over the accomplishments and support in defeat,

I wear pride in my veins and existence in my tone
a delighted double helix when I'm called by my father's name,
near the old lane, he fights for me every day
there are pronunciations though the emotions same,
I wear pride in my inherited chromosome
with lashes of swirling bouquets in my vessel,
I do possess the heart of a euphoric realm
with the aroma of dignity
I learned the action how to captivate certainty,

I wear pride
holding his two fingers in my fist
walking wobbly I acquire his resilience,
He lives his childhood in me
and I,
I wear pride and
ornaments of bliss,
I wear dignity,
I wear his name,
I wear pride when I'm called by my father's name



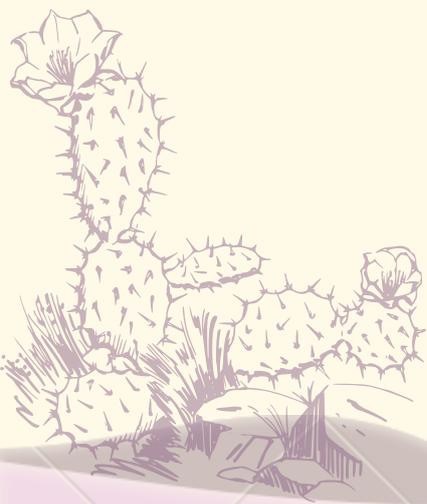
Amir Raza
Bachelor of Management Studies
2nd Year

EVERY CORNER OF THIS PLACE IS CURSED

And when I look back
Everytime I see the growth of a little cactus.
A cactus
Who had leaves,
Tender, simple and magical leaves
Have you ever seen a cactus this magical?
How beautiful it is
Like a shell
Hard and strong which
Has a beautiful pearl inside
This cactus
With a hard core and strong roots
Had these beautiful leaves outside
'cause it was magical.
But they say that the
World tends to ruin beautiful things,
And thus one dark day,
The climate which was supposed to nurture that cactus
Turned cold and stormy.

What the cactus took
Is how cactus started to look
With all the cold breeze
That the beautiful leaves have worned
And leaves turned into thorns

Shambhavi
B.Com (Hons.)
2nd Year



Canva

FROM BOARDS TO BYTES: THE DIGITAL EDUCATION TRANSITION



Who could have thought in 2019 that the mobile phones and laptops that were considered as enemies of children would become the only source of education for them in the upcoming time ?

Indeed, COVID-19 was meant for unexpected things. It turned the world upside down in no time. Each and every segment of the society suffered in some or the other way.

Students who woke up at 6 in the morning and rushed to catch their school bus, now just slept till 7:59 and waited for their online class to start at 8. Doesn't that sound funny ? But, this was the reality for many students. Online classes were the only source of interaction between a student and teacher at that time. Online classes had some advantages as well, as a student could find all the pending assignments at one place and they didn't have to carry their heavy school bags.

But, there are always two sides of a coin. Online mode of study was a new concept for teachers, students and parents. Adapting to it was never going to be an easy task. Unfortunately, many students did not have the access to this mode of learning due to the unavailability of smartphones, laptops and internet connectivity.

Although governments, at both national and state level tried their best to eliminate this disparity in the field of education, this was not an easy task to accomplish at such a large scale. Those who could access these classes also faced several issues. Increase in the screen time led to eye-strain and headache. Sitting in a sedentary position for a long time induced neck and back pain. All the students became isolated as physical interaction vanished and they could only talk to their peers through social media platforms. These online classes also meant extra work for teachers. They had to get accustomed to several online platforms, prepare presentations and ensure that each and every student was able to grasp the concepts while sitting at home. The essential interaction between a student and a teacher was not the same as before. Students also started losing their focus. They easily got distracted, such as from receiving notifications from their friends while studying and they just couldn't resist themselves from opening the notifications. The essential part of education i.e. hands-on-learning was not possible during that time. The way Physics and Chemistry could be understood by practical experiments; online teaching could never replace that. Undeniably, It is very important for young children to learn the essence of teamwork, kindness and discipline.

The best way for a child to learn these values is through interaction with teachers and classmates; and studying together at the same place. But, that was not possible during those two years. We all know that sports and outdoor activities are very essential for a student's holistic development. But, that crucial part of their journey was disrupted which led to an increase in screen time, be it video games or social media platforms.

This was the moment when students, teachers and parents realized the real essence of schools, colleges and importantly, the significance of a physical learning environment. The students, parents, and teachers were eagerly waiting for schools and colleges to reopen. As soon as that happened, one could see a smile on their faces. Although, it took some time for all of them to again adapt to the physical learning environment, it wasn't much difficult because now everyone had understood its importance. The online mode of education gave us a glimpse of the probable future education system, its advantages and drawbacks. From an optimistic perspective, we can consider that time as a learning opportunity for all of us to realize the importance of our educational environment!

Rahul Arora
B.Sc. (Hons.) Computer science
2nd Year



EMPTY YET BRIMMED

She freezes perceiving her reflection.
The bisque skin is flushed to white;
The amber lit eyes bent in desolation
And her feeble heart that screams in plight.

The shattered glass looks the same as her,
Wrecked so critically to be fathomed again.
Recollecting the memories that are now blur.
There no words left in her to explain.

She looks at herself; shadowed, dark and bleak.
A sight so dreading, she couldn't help but cough.
The tear stains are strewn across her cheek.
So empty yet brimmed with an emotion she's uncertain of.

The pooling blood stains have now dried up
The reminders of the circumstances she's endured.
Longing this moment to be the supposed cusp
And the ache to be magically cured.



Kashish Kaul
B.A. (Hons.) Psychology
2nd Year

WHY SUSTAINABLE ENERGY?

FOSSIL FUEL-HARSH IMPACT ON ENVIRONMENT

Today, the current energy system contributes much to the environment problems, including climate change, air pollution, biodiversity loss and releases of toxins into the environment, and water scarcity. The burning of fossil fuels and biomass is a major source of air pollution which causes an estimated 7 million deaths each year. Fossil fuels burning in power plants, vehicles, factories are the main source of emission that combine with the oxygen in the atmosphere to cause acid rain. Air pollution is the second leading cause of death from non-infectious diseases. An estimated 99 percent of the world's population lives with a level of air pollution that exceeds the World Health Organization recommended limits. Around 10 percent of global water use goes into energy production, mainly for cooling thermal energy plants. In dry regions, this contributes to water scarcity.

ENERGY POVERTY

Energy poverty is the lack of access to modern energy services. It refers to the situation of a large number of people in developing countries and some people in developed countries whose well-being is negatively affected by very low consumption of energy, use of dirty or polluting fuels, and excessive time spent collecting fuel to meet basic needs. It is believed that up to 400 million people in India today don't have access to reliable electricity which accounts for one-third of Indian population i.e. one in every three people in India do not have access to electricity. The government of India is aware of this problem and has been acting upon it. There has been steady progress in bringing electricity to more and more people, but too many people are still left out. Sustainable energy development due to the use of renewable energy resources can help to alleviate energy poverty:

1. Global energy poverty shows a significant trend of alleviation and rapid development of the renewable energy industry can help alleviate energy poverty.
2. The mediating role of energy efficiency in the renewable energy-poverty alleviation nexus is significant; in other words, renewable energy not only directly alleviates global energy poverty, but also has a significant inhibiting effect on energy poverty by improving energy efficiency.

Komaldeep

B.Sc. (Hons.) Computer Science
2nd Year



BLUE

Somedays, I doubt my shadows to be blue,
As I walked into the bright - like my shadows, my doubts grew;
The brightness of the lights blinded me - took me back to the memories of days I
spent in my cradle,
The day my mother left me alone with crayons - and blue was the new colour of
her favourite coffee table,
I remember that day well - she went on screaming at me for what felt like an year,
Yet, the way she has the blue of that table still preserved as a memoire makes
things a little unclear,
I travel back to the memories of my childhood,
The day my mother took me to meet the ocean, holding her hand - there I stood,
Blue was the colour of the calm ocean before my eyes,
My mother told me to be like the ocean - giving refuge to the turbulent seas
inside,
I was maybe a bit too young to understand it then,
But on the rough days this little tale is the secret to my calm - again and again,
I remember the soothing scent of the heap of sand under the rain,
Blue was the colour of my paper boat and my mother's paper plane,
I remember crying oceans when the rain tore them apart,
Little did I know that it was just the start,
My mother then hugged me - told me to make another one,
That day I learnt to not give up - I was taught of the way battles were won,
Next came the day I encountered the vast sky,
So little that could be seen - so much that was hidden - that's what taught me to
be shy,
The sky intrigued me, it taught me to not give away all of my cards,
Similar as my mother taught me to keep up my guards,
Taught me that the blue on the globe signifies a place so cruel,
And I was as precious as the blue of the sapphire jewel,
The unknown hues of the blue in the world still keep me awake at night, As the
day comes - I look at my shadow, and with the thoughts of my childhood I
reunite,
I wonder if it's the blue of my eyes and not of my shadows,
I wonder if my shadows look back at me, and agree at how the pupil shows.

Kinjal Agarwal
B.A. (Hons.) Psychology
3rd Year

SERENDIPITY

Fragile like a bud, soft as a petal.
A home of canvases destroyed little by little.
The rain which she loved seems to have shunned her,
The painting brushes count as nothing but a blunder.
She used to write the most beautiful lines,
Even with her hands engaged in the most excruciating spines.

But how could he ever forget,
The night they met.
Her words brought life to the withered;
He watched her as his dark eyes glimmered.
Her smile stopped his heart there and then;
Now he's just longing for her to smile again.

Mustering the courage; he walked to her.
she bowed while indistinctly her lips formed the word 'sir'.
He glanced straight into those honeycomb eyes
And the way coffee-dipped hair lay on her sides.
From those freckles that spread all over her wheat skin,
He already knew she's going to be his sweetest sin.

The delicate hand-sewn sunflowers clustered down her arresting white
gown;
One look his way and he'd be willing to give up his crown.
Enchanted by the scent of her cologne;
If she was the sun, he'd be the sunflower who'll happily follow her all
along.
Just how Clytie resolutely followed Apollo's chariot across the sky;
Their unrequited and forbidden love, sigh.



The days and excuses to meet her ran out of his hand;
His hope's falling like the hourglass's sand.
She stood in front of him cherishing the sunflowers he had gotten;
A tear left his eye knowing she'll never be forgotten.
His time seemed to have ended,
Contemplating if this fate could've been bended.
She was sunshine and he was rain.
In the end was it all in vain?

Walking on the path he was ought to regret;
But then he saw her crying silhouette.
His feet escalated to her crying form,
One look at her face and his heart was torn.
Hands couldn't resist but wipe those tears;
Placing her head on his chest, he let go of all the fears.
His words seemed to have echoed in the shore,
"You're all that I've ever been waiting and longing for."

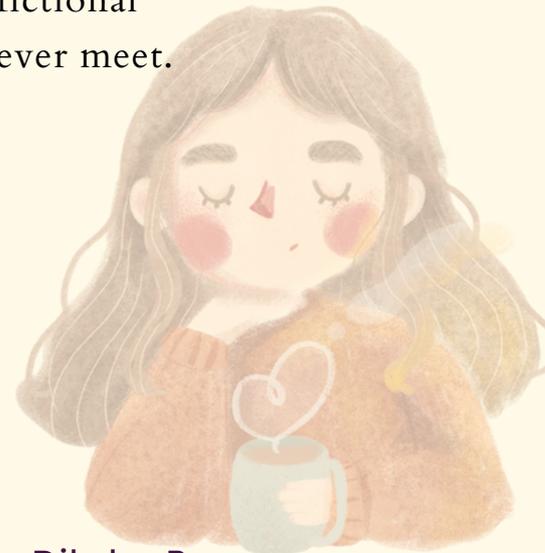
she looks in his eyes; sun-kissed and free.
Looking so beautiful he couldn't disagree.
Sitting beside the windowsill,
She paints a rainbow glowing behind the hill.
she accepted everything with such equanimity;
Maybe this is what they call serendipity?

Kashish Kaul
B.A. (Hons.) Psychology
2nd Year



THIS IS WHERE I WANNA BE

This is where I wanna be,
Alone with myself and a pot full of coffee.
As if soon it would rain,
The sky is painted grey.
Just like my heart
that leads me so astray.
Wrapped in a cozy soft blanket,
I sit by my window sill.
Promising myself sunshine,
As the sun will.
The building I live in high rise
My apartment so small and the city beneath so big.
Isolation along with peace, why is the price so expensive?
The aroma filling the space is bittersweet
Just like the story of the book I read.
I yet again fall in love with someone fictional
Knowing very well that the ends will never meet.
This is the place I wanna be.



Diksha Pawar
B.A. (Hons.) Psychology
2nd Year



'EVERYWHERE' WILL BE AI

Humanity is moving towards AI monopoly over humans. Artificial Intelligence based on different technological equipment, devices, hardwares and AI based robots will take over humans in all sectors.



Artificial Intelligence (AI) is the intelligence demonstrated by machines. AI applications include advanced web search engines, recommendation systems, understanding human speech, self-driving cars, automated decision-making and competing at the highest level in strategic game systems.

Since it was founded in 1956 as an academic discipline, Artificial Intelligence has been upgrading at an increasingly fast pace and now, in the 21st century with highly mathematical statistics, machine learning has dominated the field, by solving challenging problems across all industries and academics.

From toys to satellites and from computers to robots, everything is based on artificial intelligence algorithms. Today, our life has transformed with the integration of AI in inventions such as driverless cars and robotic vacuum cleaners. Among machines with required cognitive intelligence, we are already familiar with AI products like Google, YouTube, Netflix, Meta, Siri or Alexa, Tesla, Chess and Go. However, these are just in their early phases. Every year several software, devices, machines are developed across the world and billions of dollars are invested on R&D and market leading organizations. Universities such as Stanford, Harvard, IIT's, DRDO are working day and night to make AI more efficient. Several companies have acquired and also have their in-house R&D facilities to work on development of new devices and software. In a report, Stanford committed to host 100 AI based projects in 5 years for 100 years.

Companies like Neuralink are working on a chip which can be implanted inside the human brain as aid for intellectual deficiency among children and adults. Now, the AI market is a billion dollar industry because AI is virtually present everywhere.

ISRO is working on reusable rockets which are based on AI algorithms and machine learning technology. In the 21st century, the most profitable business is of AI based technology are either in the form of Robotics, Cloud Computing, Space, and gaming. With AI and its advancement, the world is moving towards the 5th generation of war-fare. 5th generation is a future generation war-fare method which will begin just after the 4th generation. This includes AI based weaponry. World powers like India, USA, UK, Israel, Russia, China and some other countries have already started their preparation for 5th generation warfare tech-tricks. Countries have invested billions of dollars and are ready to invest billions more to lead the warfare. In this regard, countries are investing in ingenious inventions such as developing AI exoskeleton technology based special military suits for future soldiers.

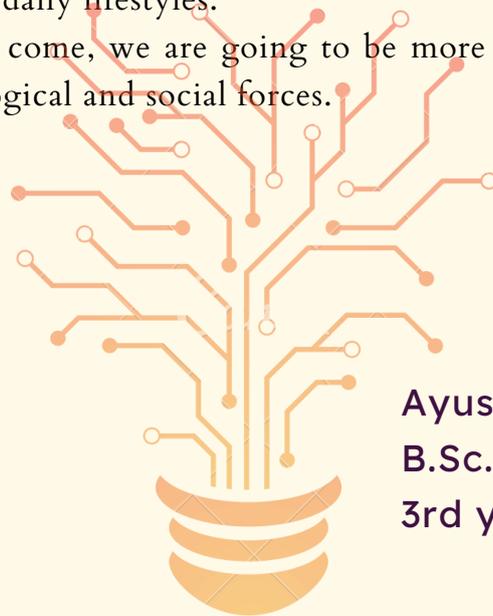
China's attempts at creating a superhuman using AI which learns DNAs and combines the best human (and even animal to achieve desired qualities for superhuman) species DNAs has been in the news several times.

In the future, war-fare drones and anti-drone systems will also play an important role as counties have already developed and enhanced their capability with further AI integration to devices and by adding efficient auto-motion. These AI inventions, however, are just the beginning.

An unending curiosity of humanity has been to explore the world beyond our planet Earth. NASA has used its past programme failure to reach space coupled with the dynamicity of AI to quench this curiosity time and again.

Even after all these developments AI is just in its conception phase. It is only beginning to assume a major position in Robotics as can be seen in the case of Japan which is currently dealing with a shortage of young working population, and is integrating robots in their daily lifestyles.

Inevitably, in the years to come, we are going to be more and more dependable on AI because of our technological and social forces.

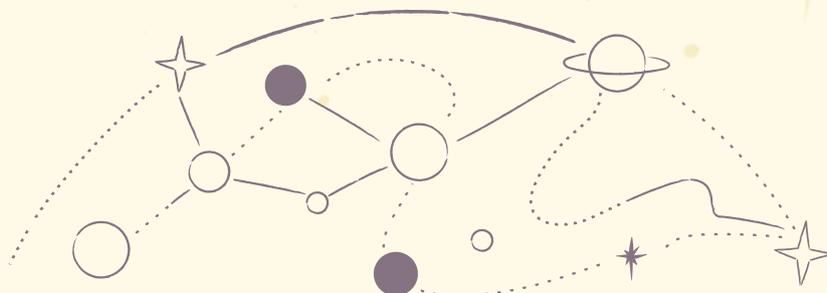


Ayush Kumar Jha
B.Sc. (Hons.) Computer Science
3rd year

WORLDS APART

Worlds apart
Astronomy seems to describe them, their tale
A starry night sky,
A bed full of everblooming flowers is what it always has been
Their bond was like a galaxy full of stars,
So much vividly and kindness that
They glistened up above the clouds
She liked listening to them up until the sundown
They loved looking at her
As lovingly as a selenophile would gaze the moon
They always have been unique
As a cosmic snowball
She has always been as alive as
A nebula rich constellation,
The day they connected was as special as once in a 75 years Halley
The galaxy seemed to explain it all, how distinctive their relationship is,
The only stumbling thought is
What if the galaxy runs out of stars?
Will they ever survive being worlds apart?

Vrinda Sati
B.A. (Hons.) Psychology
2nd Year



APPETENCY

Wherever I go these days,
I find myself seeping into the crippling pain of being alone.

Even in a room full of familiar faces,
The only familiarity that hugs me,
Not leaving me alone even when asked to, is loneliness.

Thinking of the only possible solution,
I find ways to disappear.

I mostly find an empty corner in a room filled with people,
And when I cannot,
I become the empty corner.

People come to me, just to fill the void for a second, only to leave the very next.
When the food arrives, I spot my favourite dish, only to already feel full. An empty
person with eyes full of tears and a heart full of ache.
I now also have a stomach full of emptiness.

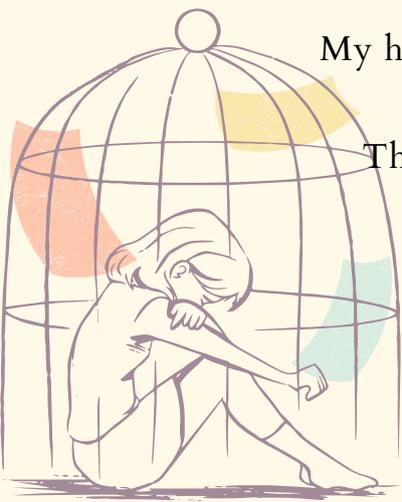
Before anyone notices it, I wipe my face and grab a plate, filling it with smiling
depression.

A person I would on usual days call my bestfriend, but right now a familiar
face, arrives, and asks me if I have eaten anything.

Forgetting the familiarity of sharing something unknowingly, I ask since
when. He looks at me and I at him, immediately filled with regret.

I know through his looks that he expects an answer,
But how do I tell him,
My hunger can now never be erased by spices and minerals.

The nutrients my body craves are of love and comfort,
And love, it can never be served on a plate.



Kinjal Agarwal
B.A. (Hons.) Psychology
3rd Year

ECONOMIC RECESSION AND ITS IMPACT ON INDIA



Many of you might have heard the term “Economic Recession” in recent times. But, are you really aware of its implications and impact?

Everyone suffers in some or the other way in the case of a world-wide economic recession. You might be thinking “Hey! What does this term “Economic Recession” signify ?” Simply put, economic recession basically denotes the time period when the GDP rates decline, rate of unemployment rises, and there is a drop in public spending and consequent negative effects on businesses.

But, why is it important for us to explore this concept now more than ever ?

Economic recession basically involves a recurring cycle : Businesses lay off workers □ People spend less money □ Businesses make fewer profits □ Businesses lay off workers. But, what’s astonishing about the economic recession this time is that it is significantly different from earlier patterns. In many parts of the world, it is being observed that although GDP rates are declining, unemployment rates are also declining which seems contradictory to the earlier trends. But, as per many researchers, this type of scenario is unsustainable. According to them, two things can happen; either the economic conditions start improving and companies start expanding again or the economy starts contracting and companies start laying off workers.

Due to the impacts of economic recession, companies try to cut costs in order to maximize their profits, which in turn, increases unemployment rates, reduces the consumption rates of the customers, which eventually leads to recession. Economic recession also leads to greater uncertainty about future jobs and income. It's not always easy to determine whether a country is under a recession or not. There are many factors one needs to keep in mind while analysing the economic aspects of a country. The recession can also leave long-lasting impacts. That's why it's very important for everyone to know about this so that the world can tackle such a challenge together.

When people are unable to meet their debt obligations, they reduce their investment and consumption, as a result of which, economic activities decline. Sometimes, there may be some other reasons for such a grim condition, like geopolitical issues or a pandemic like COVID-19 which led to disruption of business activities in many countries.

IMPACT ON INDIA

While recession seems to be a certainty now, how much will it impact India? Some economic researchers say that Indian economy has enough forex reserves and the companies have managed to maintain healthy balance sheets. However, some other researchers have contradictory opinions as well. In the present scenario of globalization, it is very difficult to stay away from what the world is suffering with. Due to globalization, the world economies are strongly interconnected. If any slowdown happens anywhere in the world, then to an extent, India would be affected by it as well. The question remains, "Are we moving towards a period of recession?" The Government has an optimistic view over India's economic scenario, which in fact, is a good sign for a developing nation. This optimism can be justified because India has seen great success in the service sector which has played a crucial role in the economy along with other sectors over the years. Our nation has the potential to maintain a good synchronization between the primary, secondary and tertiary sectors. We can also look forward to emerging sectors such as renewable energy, so that we can get a strong hold on certain sectors which can minimize the impact of recession. If everything goes well, the nation can overcome this challenge of recession and it can keep the momentum of development steady.

Rahul Arora
B.Sc. (Hons.) Computer Science
2ndYear

THE DIFFERENT PERSPECTIVES OF RIGHT AND WRONG

"Right and wrong are not relative terms. There are fundamental truths. Evil flourishes, but good men continue to battle it - and win."

- Mike Gallagher



We hear of corruption, poverty, molestation, murders, frauds, but all of these crimes arise from one simple question, "what is right and what is wrong". This very question baffles the lawmakers till this day. This may sound platitudinous, but did you ever stop to question the ways of the world?

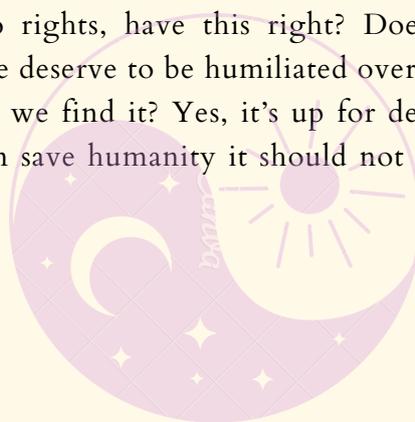
According to David Hume a famous philosopher, belief should be a result of repetition of practice and thus it should always grow with experience. But humans are the only animals who learn from the experiences of others of their kind and hence, we humans, learned from those who came before us and we gradually accepted what they experienced as the truth or as a hard fact. True law, the code of justice, the essence of our views of right and wrong, make the conscience of our society. It has taken thousands of years to develop, and it is the greatest, the most distinguishing quality which has developed with mankind.

How do we establish what is right and what is wrong? Consider this- there are five workers on a path and you are driving this car, whose brakes don't work. What works, however, is the steering wheel and you can change the direction of the car towards a path where only a single man is working. If you have to choose, whom to save, you will probably choose the five workers if you hold the view that losing one is better than losing five.

Let's change the narrative a little bit. This time, you are not the driver but a man who is watching this incident unfold from a bridge right over the path, right next to you, is a really fat person who is looking over the bridge. You again have a choice; you can give that man a little push and he will fall right in front of the car and the accident can be prevented. What will you choose now? Why not push him, you save five and sacrifice one. And so, I ask again "what is right and what is wrong?" Principles that govern "dharma" are so diversified and unclear that even best scholars find it difficult to contemplate how to deal with a certain kind of crime and what could be the possible punishment for a crime. According to a study conducted in the past decade, only 23% of victims have confidence that justice is being served to them. Either their definition of justice is tremendously different or there is something wrong with our laws that define what should be the punishment for a crime.

Ever heard of Draupadi's iconic prashna? When Yudhishtir lost his kingdom, his brothers, and his wife during the epic game of dice, Duryodhana sent his messenger to bring Draupadi into a court full of men to humiliate her, it was then that she raised the question "Did he lose his wife first or himself? If Yudhistir lost himself first, did he have any right to gamble on his wife, can a slave who has no rights, have this right? Does a husband have this kind of authority over his wife? Did she deserve to be humiliated over a choice she did not make?"

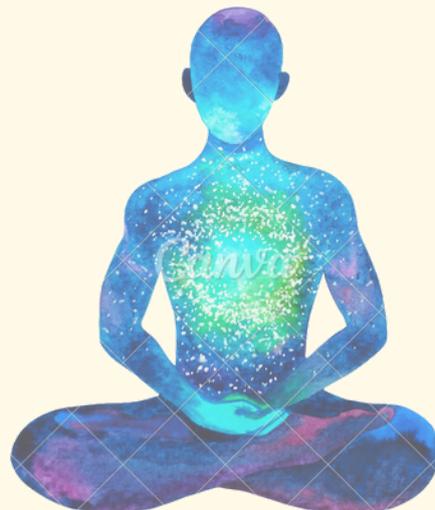
What is "dharma" and how do we find it? Yes, it's up for debate but only if there exists the ultimate truth, further, if it can save humanity it should not be up for debate, and should be written and practiced.



Chirag Gupta
BMS
3rd Year

MY SOUL IS MADE UP OF AIR POCKETS

Free but enslaved, as contradictory as it sounds. It's a part of my soul. My soul is made of air pockets. Pockets that hold ingredients of the recipe of my life. They might seem like light dust particles but they are as heavy as the whole water on the Earth. But some are as light as feathers too. My soul lives at the ends: either the cliff of heaven or hell. A garden full of flowers being kissed by the gentlest wind. The serenity of the lake being teased by the breeze. That's how my soul is, it is kissed by every air pocket which contains the serenity of my heart and mind. But at the contradiction, the same wind turns into a ferocious storm uprooting the beauty of the flowers. The same breeze shows the treacherous sea with alarming high tides. That's how my soul is, the air becomes heavy with the negative emotions that it rains tears full of sorrow. A pocket filled with laughter, another with cries, yet another with grief and guilt but some filled with peace and calmness. Each air pocket of mine turns into winds of different intensities. They seem like a gap in my soul yet they are filled with the very essence of mine. Just like a rainbow they come together like the seven colors to form something that every human on this earth is fascinated to see: a soul like a rainbow. Just like every single piece of a puzzle combines together to form a beautiful picture, these pockets combine together to form my soul. They make me who I am. The air pockets of my soul are intangible, they stay in the comfort of me. So, now you know, a brief history of the air pockets of my soul which are curious, adventurous and full of life. They are the royal treasure which I want to hide, maybe call it selfish but I want to protect those air pockets after all they are me



Kanishka Rai
B.Sc (Hons) Computer Science
First Year

COLLEGE SOCIETIES

ANHAD

The Music Society



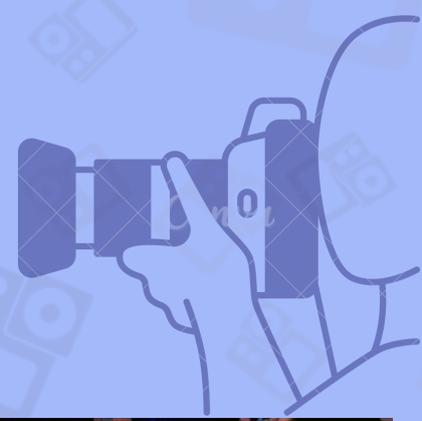
ADVAITAA

The Western Dance Society



ILLUMINATI

The Photography Society



MANIERA

The Fine Arts Society



NRITYAANG

The Indian Dance Society



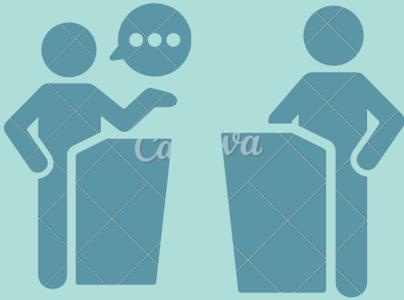
SHADES

The Theatre Society



VAGMITA

The Poetry Society



VAGMITA

DEBSOC The Debating Society



ART GALLERY

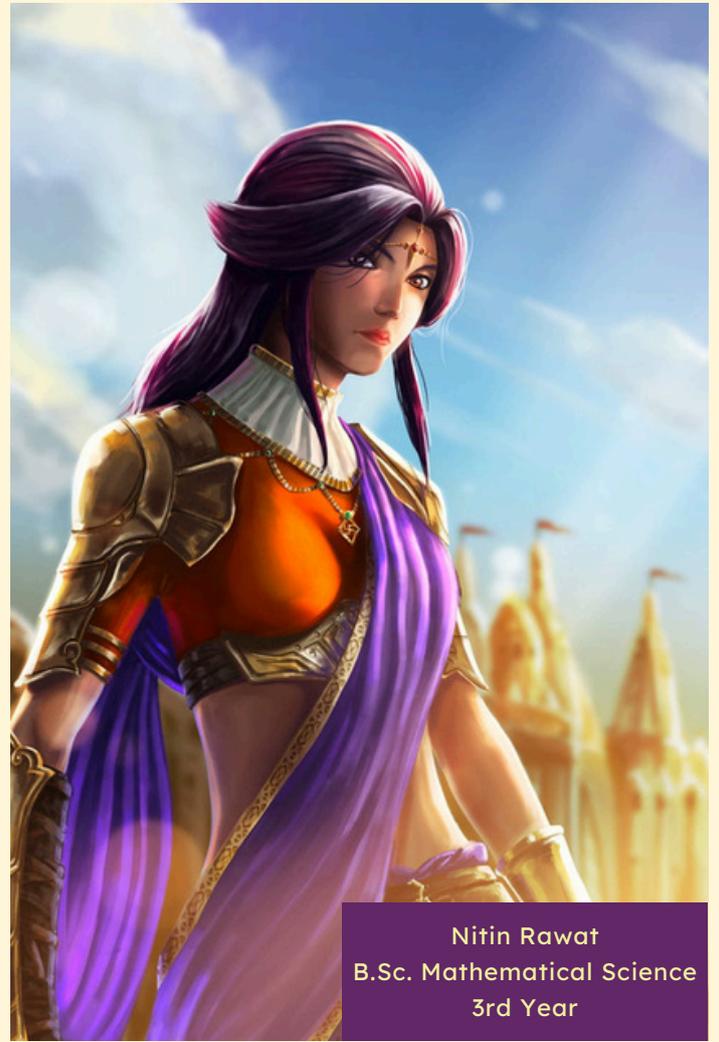


Ayush Raj

3rd Year B.A. (H) Psychology



Khushi Sibal
B.A. (Hons.) Psychology
3rd Year



Nitin Rawat
B.Sc. Mathematical Science
3rd Year



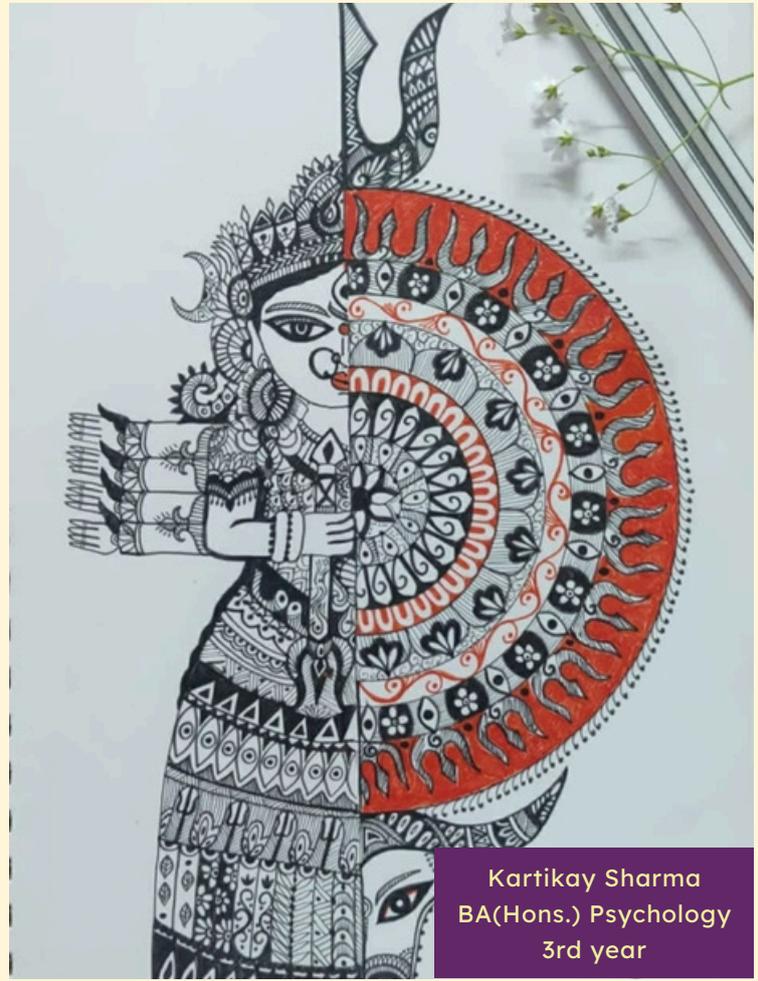
Kashish Jindal
BCom (Hons.)
3rd Year



Saloni Chauhan
B.Sc. (Hons.) CS
3rd Year



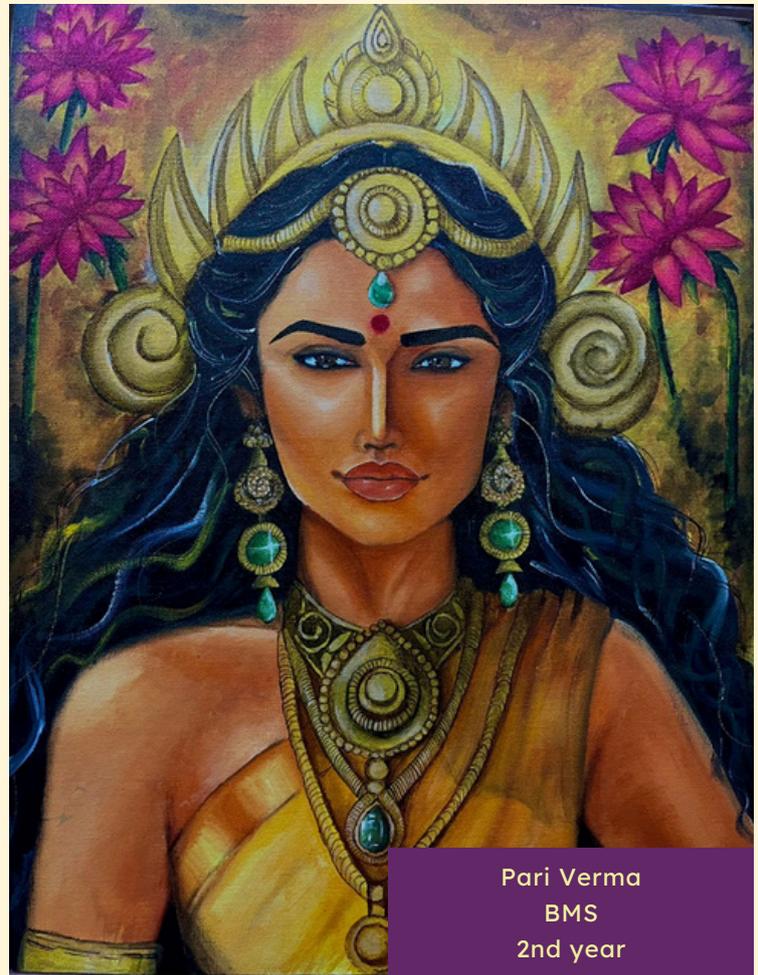
Riya Mann
Bcom (Hons.)
3rd year



Kartikay Sharma
BA(Hons.) Psychology
3rd year



Ayush Kumar Jaiswal
Bcom (Hons.)
2nd year



Pari Verma
BMS
2nd year



KESHAV MAHAVIDYALAYA

NAAC Accredited 'A' Grade Cycle 2

University of Delhi

H-4-5 Zone, Pitampura, Delhi - 110034

Ph: 011-27018805 Telefax: 011-27018806

Girl's Hostel: 011-27018807

College Email : principal@keshav.du.ac.in

Hostel Email : hostel@keshav.du.ac.in

Website: keshav.du.ac.in